भोजपुर के

श्री शान्तिनाथ

ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

रचयिता

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के शिष्य

अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज

प्रस्तोता

बा. ब्र. संजय भैया, मुरैना

कृति	:	भोजपुर के श्री शान्तिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना
आशीर्वाद	:	संयम स्वर्ण महोत्सव मण्डित आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज
कृतिकार	:	अनेक विधान रचयिता, बुंदेली संत मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज
संयोजक	:	बा. ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
संस्करण	:	प्रथम, ११०० प्रतियाँ
प्रसंग	:	२४वाँ चातुर्मास, २०२२
लागत मूल्य	:	१५/-
प्राप्ति स्थान	:	श्री दिगम्बर जैन अतिशय सिद्धक्षेत्र पवाजी, ललितपुर (उ. प्र.) मोबा.: 8953645636, 8299785226
मुद्रक	:	विकास ऑफसेट, भोपाल

पुण्यार्जक

१००८ श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र भोजपुर

क्षेत्र का परिचय

जैसा कि हम सब जानते हैं कि हमारा भारत देश पुण्यभूमि, तपोभूमि, तीर्थभूमि एवं धर्मभूमि है। जैन धर्म के २४ तीर्थंकरों की कल्याणक भूमि होने से जैनों के लिए यह भारत देश कल्याणक भूमि है सो प्रत्येक धर्मावलंबी अपनी श्रद्धा के अनुसार तीर्थों का निर्माण करवाकर अपने आत्मतीर्थ के कल्याण करने की भावना करता है या तीर्थों पर आकर भक्ति करके भी अपना कल्याण करने का रास्ता प्रशस्त करता है। इसी परम्परा में निर्वाणक्षेत्र, सिद्धक्षेत्र, अतिशयक्षेत्र और तीर्थक्षेत्र हमारे देश के विभिन्न स्थानों में पाए जाते हैं।

अनेकानेक अतिशय क्षेत्रों में मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल से दक्षिण पूर्व दिशा में लगभग ३० किलोमीटर की दूरी पर सलिला वेत्रवती (वेतवा) और कल्याण स्रोत (कलियासोत) नदियों के संगम पर भोपाल चिकलोद रोड पर बंगरसिया ग्राम के दक्षिण में चट्टानी भूभाग पर भोजपुर ग्राम अवस्थित है। यह छोटा सा गाँव अपने अंचल में श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, शिव मंदिर और कुछ अवशेषों को समेटे हुए प्रसिद्धि को प्राप्त है।

भोजपुर अतिशय क्षेत्र प्रभु की भक्ति के लिए ही प्रसिद्ध नहीं बल्कि संत साधुओं की त्याग तपस्या व साधना के लिए भी प्रसिद्ध है क्योंकि शास्त्रों और सिलापट्टों के लेखों के अनुसार यहीं जैन धर्म के धुरंधर उद्भट विद्वान मनीषी दिगम्बर जैनाचार्य श्री मानतुंग महाराज की समाधि स्थली भी है। जी हाँ! ये वही

दिगम्बर जैनाचार्य हैं जिन्होंने जिनवाणी माता की सेवा करते हुए और जिनशासन की प्रभावना करते हुए प्रसिद्ध स्त्रोत्र **श्री भक्तामर जी** की रचना की थी। यह रचना कालजयी, मृत्युंजयी और अपने अतिशयों के लिए देश-विदेश में जैन-जैनेतर लोगों में प्रसिद्ध है।

इस क्षेत्र पर अनेकानेक त्यागी-तपस्वी आते रहते हैं इसी क्रम में २००२ का वर्षायोग परम पूज्य गुरुवर श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के सानिध्य में नेमावर में सम्पन्न हुआ तदुपरांत भोजपुर में धवलाजी ग्रंथ की वाचना हुई सो भोजपुर के अतिशयकारी और सुरम्य-प्राकृतिक वातावरण से परिचित होते हुए श्री शान्तिनाथ भगवान का दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। अब पहाड़ी (कटनी) पंचकल्याणक (८ से १३ मई २०२२) के अवसर पर अतिशय क्षेत्र भोजपुर के प्रचार मंत्री श्री संजीव जैन औबेदुल्लागंज की पहाड़ी में ससुराल होने से यहाँ पर उनसे परिचय हुआ। उन्होंने पूजन की रचना हेतु निवेदन किया। यह भक्ति प्रसून श्री शान्तिनाथ भगवान के चरणों में एवं गुरुवर आचार्य १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज के कर कमलों में समर्पित है। सभी लोग धर्म लाभ लें और शान्तिमार्ग पर बढ़ें इसी भावना के साथ श्री शांतिनाथ भगवान के एवं गुरु महाराज के चरणो में नमोस्तु करते हुए सभी को आशीर्वाद देते हुए इत्यलं ॥

यह कार्य श्री शांतिनाथ भगवान के जन्म-तप और मोक्षकल्याणक के अवसर (जेष्ठ कृष्ण चतुर्दशी) पर सम्पन्न हुआ।

तदनुसार २९-०५-२०२२

मुनि सुव्रतसागर

अन्तर्भाव

जिनेन्द्र भगवान् की भक्ति कर्म काटने का सशक्त साधन है। जैसे लैंस के फोकस से कागज जल जाता है वैसे ही भक्ति के फोकस से हमारे कर्मरूपी कागज जल जाते हैं। भगवान् का नाम मात्र स्मरण करने से सभी किरणें फोकस बनकर पाप समूह को नष्ट करती हैं।

जिस तरह भक्तामर स्तोत्र के द्वारा श्रीवृषभदेव की भक्ति दीप अर्चना के माध्यम से की जाती है उसी तरह शान्तिप्रदाता जगत के शान्तिकारक श्री शान्तिनाथ भगवान की भक्ति करने का यह नया सोपान **संत शिरोमणि परमपूज्य आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज** के सुयोग्य शिष्य **अनेक विधान रचयिता बुंदेली संत पूज्य मुनि श्रीसुव्रतसागरजी महाराज** ने प्रस्तुत कृति **'श्री शान्तिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना'** की रचना करके हम सबको दिया है जो कि भक्त को जन्म-जरा और मृत्यु से मुक्ति दिलाने वाला एवं अतिशय पुण्य को बढ़ाने वाला है। श्रद्धा के साथ भक्ति की भावना से ४८ अर्घ्य/दीपों के साथ अथवा एक दीप के साथ यह आराधना करने से सभी इष्ट कार्य की सिद्धि होती है।

इस कृति की संयोजना में जिन लोगों ने जो भी सहयोग किया उन सबके लिए बहुत-बहुत साधुवाद। सभी भगवान् की भक्ति करके अपूर्व पुण्यार्जन करेंगे इसी भावना के साथ सभी को सादर जय-जिनेन्द्र!

तुम्हें सारथी बना लिया है, मोक्षपुरी के गजरथ का।
तुरत हमें दर्शन करवा दो, शुद्धातम के तीरथ का॥
कहो कहाँ हस्ताक्षर कर दें, हमको भी स्वीकार करो।
भक्त खड़े नत हाथ जोड़कर, हम सबका उद्धार करो॥

— बा. ब्र. संजय, मुरैना- ९४२५१२८८१७

मंगल मंत्र

धर्म चाहने वाले बोलें, ओम् णमो अरिहंताणं।
मोक्ष चाहने वाले बोलें, ओम् णमो सिद्धाणं।
दीक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो आइरियाणं।
शिक्षा चाहने वाले बोलें, ओम् णमो उवज्झायाणं।
शान्ति चाहने वाले बोलें, ओम् णमो लोए सव्वसाहूणं॥
जिनशासन के दर्शक बोलें, ऐसो पंच णमोयारो।
नवदेवों के सेवक बोलें, सव्व पावप्पणासणो।
सिद्धों के आराधक बोलें, मंगलाणं च सव्वेसिं।
शुद्धातम के भावक बोलें, पढमं होई मंगलम्॥

मंगल भावना

तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी न होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
हे प्रभु! निजमंगल के पहले, जग का मंगल होवे॥१॥तेरा...
जिन माँ बाबुल ने जन्मा है, उनका मंगल होवे।
जिन बन्धु ने पाला पोषा, उनका मंगल होवे॥
जिन मित्रों ने हमें सम्हाला, उनका मंगल होवे।
जिन गुरुओं ने ज्ञान दिया है, उनका मंगल होवे॥२॥ तेरा....
हम जिस दुनियाँ में रहते हैं, उसका मंगल होवे।
हम जिस भारत देश में रहते, उसका मंगल होवे॥
हम जिस राज्य प्रान्त में रहते, उसका मंगल होवे।
हम जिस नगर शहर में रहते, उसका मंगल होवे॥४॥ तेरा...

===

अभिषेक स्तुति

(लय–जीवन है पानी की बूँद...)

प्रासुक जल से जिनवरजी का न्हवन कराओ रे।
कलशों से धारा हाँ–हाँ–२, सब– रोज कराओ रे॥ प्रासुक...

१. ये अरिहंत जिनेश्वर हैं, परमपूज्य परमेश्वर हैं।
परम शुद्ध काया वाले, जगतपूज्य धर्मेश्वर हैं॥
कलशों के पहले हाँ हाँ–२, सब शीश झुकाओ रे। प्रासुक...

२. देव रतन के कलशा ले, नीर क्षीरसागर का ले।
बिम्बों के अभिषेक करें, बिम्ब अकृत्रिम छवि वाले॥
बिम्बों की महिमा हाँ हाँ–२, सब मिलकर गाओ रे। प्रासुक...

३. रतन कलश भी पास नहीं, क्षीर सिन्धु का नीर नहीं।
भाव भक्तिमय हम आये, प्रासुक लेकर नीर सही॥
ढारो रे कलशा हाँ हाँ–२, सब पुण्य कमाओ रे। प्रासुक...

४. भगवन् कोई न छू सकते, किन्तु बिम्ब तो छू सकते।
वो भी बस अभिषेक समय, इन्हें शीश पर धर सकते॥
मौका ये पाके हाँ हाँ–२, सब होड़ लगाओ रे। प्रासुक...

५. फिर प्रक्षालन भी कर दो, श्रद्धा से गंधोदक लो।
गंधोदक से रोग सभी, तन मन के अपने हर लो॥
झूमो रे नाचो हाँ हाँ–२, जयकार लगाओ रे। प्रासुक...

६. प्रासुक जल की यह धारा, समझो ना केवल धारा।
कर्त्ता दर्शक 'सुव्रत' के, कर्मों को धोती धारा॥
धारा जल धारा हाँ हाँ–२, सब करो कराओ रे। प्रासुक...

===

अभिषेक आरती

(लय–श्री सिद्धचक्र का पाठ....)

प्रभु का करके अभिषेक, यहाँ सिर टेक, ज्योति उजियारी।
हम करें आरती प्यारी॥

१. श्री वृषभ–वीर–प्रभु चौबीसौं, श्री परमेष्ठी भगवन् पाँचों।
श्री देव–शास्त्र–गुरु नवदेवों की न्यारी, हम करें आरती प्यारी॥
प्रभु का...

२. जैसे अभिषेक निराले हैं, वैसे यह दीप उजाले हैं।
अभिषेक आरती की जग में बलिहारी, हों भव–भव में उपकारी॥
प्रभु का...

३. प्रभु का अभिषेक न्हवन करके, जो करें आरती चित धरके।
उनके टलते दुख दर्द कष्ट बीमारी, वे रह न सकें संसारी॥
प्रभु का...

४. जब अशुभ स्वप्न में भरत फँसे, कर न्हवन आरती भरत बचे।
भरतेश्वर ने आदीश्वर आज्ञा धारी, हुए मुक्ति के अधिकारी॥
प्रभु का...

५. थी श्रीपाल को बीमारी, जिससे मैंना थी दुखियारी।
अभिषेक आरती गंधोदक दुख हारी, वह करे महोत्सव भारी॥
प्रभु का...

६. अभिषेक न धूल धुलाना है, अभिषेक धर्म अपनाना है।
अभिषेक देव स्वर्गों में करके भारी, होते जिन आज्ञाकारी॥
प्रभु का...

७. अभिषेक आरती पूजाएँ, सौभाग्य पुण्य से मिल पाएँ।
सो 'सुव्रत' हों जिनशासन के आभारी, अब पाएँ मोक्ष सवारी॥
प्रभु का...

===

श्री नवदेवता पूजन

(हरिगीतिका)

जब प्रार्थना को कर जुड़े तो, आतमा आकुल हुई।
जब वन्दना को पग उठे तो, वेदना व्याकुल हुई॥
जब साधना को सुर सजे तो, गुनगुनाएँ गीत हम।
जब अर्चना को मन हुआ तो, आ गए जिन-तीर्थ हम॥
अरिहन्त सिद्धाचार्य गुरु-उवझाय साधु जिन-धरम।
जिन-शास्त्र-प्रतिमाएँ जिनालय, देवता ये नव परम॥
नव देवताओं की करें हम, अर्चना पूजें चरण।
बस प्रार्थना हम भक्त की सुन, दीजिये हमको शरण॥

(दोहा)

नव देवों को हम भजें, करें-करें आह्वान।
हृदयासन आसीन हों, भक्तों के भगवान॥

ॐ ह्रीं श्रीअर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालय समूह अत्र अवतर-अवतर...। अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...। (पुष्पांजलिं...)

(सखी)

अपने ही हमको जन्में, फिर मारें और जलाएँ।
फिर पीछे आँसु बहाके, कर हाय! हाय! चिल्लाएँ॥
मृग मरीचिका अपनों की, तुम सम तजने जल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं...।

हम करें भरोसा जिन पर, वे धोखे हमको देते।
हम दिल में जिन्हें वसाएँ, वे राख हमें कर देते॥

तुम सम अपनों की तृष्णा, हम तजने चंदन लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदनं...।

हम जिनको गले लगाएँ, वे गला हमारा घोंटें।
वे हमको खूब रुलाएँ, हम जिनके आँसू पोंछें॥
यह अपनों की आकुलता, तजने हम अक्षत लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान्...।

अपने ही फाँसी दें फिर, फोटो पर माला डालें।
वाणी के बाण चलाके, चित् छिन्न-भिन्न कर डालें॥
तुम सम अपनों के काँटे, तजने पुष्पों को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः कामबाणविध्वंसनाय पुष्पाणि...।

खुद भूखे प्यासे रहकर, अपनों की भूख मिटाई।
जीवन में विष वे घोलें, जिनको दें दूध मलाई॥
विश्वासघात अपनों का, सहने नैवेद्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यः क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं...।

गोदी में जिन्हें खिलाएँ, हम काजल जिन्हें लगाएँ।
हथकड़ी बेड़ियाँ वे दें, हम चलना जिन्हें सिखाएँ॥
यों तजें मोह माया ज्यों, तुम तज निजदीप जलाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोहान्धकारविनाशनाय दीपं...।

घर जिनका यहाँ वसाकर, जी-जान जिन्हें हम सौंपें।

वे घर-घर हमें फिराएँ, सब पाप हमीं पर थोपें॥
बेरुखी तजें अपनों की, सो धूप भूप को लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अष्टकर्मदहनाय धूपं...।

बदनाम हुए हम जिनको, बदनाम हमें वे करते।
सुख चैन वही तो छीनें, फिर हम क्यों उन पर मरते॥
अपनों की आँख-मिचौली, तुम सम तजने फल लाए।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये फलं...।

हम जिनको सगा समझते, वे देकर दगा दबाएँ।
फिर देकर दाग जलाएँ, हम जिन पर प्राण लुटाएँ॥
ये दाग दगा अपनों के, तजने को अर्घ्य चढ़ाएँ।
नव देव हमें आश्रय दो, हम भेंट नमोऽस्तु लाए॥

ॐ ह्रीं श्री नवदेवेभ्यो अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला (दोहा)

जिननवदेवा पूज्य हैं, जिन की जोड़ न तोड़।
अतः कहें जयमालिका, हाथ जोड़ सिर मोड़॥

(भुजंगप्रयात)

जितेन्द्री हितैषी अरिहन्त प्यारे, हमें तारते सो नमोऽस्तु हमारे।
निकर्मा सभी सिद्ध शुद्धात्म धारे, तुम्हीं भक्त के लक्ष्य वन्दन हमारे॥ १॥
परम पूज्य आचार्य दीक्षादि दानी, यथाजात रत्नत्रयी को नमामि।
हमें मोक्ष का मार्ग दें तत्त्वज्ञानी, नमोऽस्तु तुम्हें हो उपाध्याय स्वामी॥ २॥
दिगम्बर निरम्बर चिदातम विहारी, सभी साधुओं को नमोऽस्तु हमारी।
यही पंचपरमेष्ठी आदर्श अपने, इन्हें पूजने से हुए पूर्ण सपने॥ ३॥

सदा चक्र जिनधर्म का ही चलेगा, इसी से चिदानन्द हमको मिलेगा।
जिनागम करें पूर्ण अध्यात्म शान्ति, हरें मोह मिथ्यात्व अज्ञान भ्रांति॥ ४॥
जगत् पूज्य जिनबिम्ब हैं चैत्य साँचे, करें दर्श तो भक्त भक्ति से नाँचें।
कृत्रिम अकृत्रिम जिनालय हमारे, समोसर्ण जैसे हमें हैं सहारे॥ ५॥
यही देवता हैं नवों पूज्य स्वामी, इन्हीं की कृपा से मिले मुक्तिरानी।
इन्हीं के मिलें दर्श जब पुण्य जागें, इन्हें पूजने से सभी कष्ट भागें॥ ६॥
जपें जाप तो शुद्ध आतम बनेगी, धरें ध्यान तो ज्ञान ज्योति जलेगी।
अतः प्राप्त छाया इन्हीं की हमें हो, इसी से नमोऽस्तु सदा ही इन्हें हो॥ ७॥
हमें प्राप्त रत्नत्रयी धर्म होवे, पुनः भेद विज्ञान से कर्म खोवें।
नवों देवता से धरें प्रेम हम भी, बनें संत अरिहन्त फिर सिद्ध हम भी॥ ८॥
हमें रूप सत्यं शिवं सुन्दरं दो, चले आए हम भी तभी मंदिरं को।
कि जब तक यहाँ चाँद तारे रहेंगे, सदा गीत 'सुव्रत' तो गाते रहेंगे॥ ९॥

(दोहा)

मुक्तिरमा के धाम हैं, चित् चैतन्य मुकाम।
परमपूज्य नवदेव को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री अर्हत्-सिद्धाचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-जिनधर्म-जिनागम-जिनचैत्य-चैत्यालयेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

करें पूज्य नवदेवता, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दुःखों को मेंट दो, नवदेवा जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

अर्घ्यावली

अकृत्रिम चैत्यालय का अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अर्हंतों बिन जिन बिम्बों से, धर्म ध्यान हम करते हैं।
बिम्ब बिना चैत्यालय सुन लो, भक्त न पूजा करते हैं॥
अर्घ्य चढ़ा के मंदिर पूजें, तारणतरण खिवैया सा।
अकृत्रिम चैत्यालय भज के, पाएँ तीर तिरैया सा॥

ॐ ह्रीं श्री अकृत्रिम चैत्यालय सम्बन्धी जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

विद्यमान बीसतीर्थंकर का अर्घ्य (दोहा)

विद्यमान तीर्थंकरा, विदेहक्षेत्र के बीस।
आत्म द्रव्य के लाभ को, करें नमोऽस्तु धर शीश॥

ॐ ह्रीं विदेहक्षेत्रस्थ विद्यमानविंशति तीर्थंकरेभ्यः पूर्णार्घ्यं...।

सिद्धपरमेष्ठी का अर्घ्य (सखी)

कर नष्ट अष्ट कर्मों को, तुमने निज नगर वसाया।
तब मुक्तिवधू ने तुमको, झट अपने गले लगाया॥
इस देह नगर की दुनियाँ, अपने सम दूर करा दो।
अर्घ्यार्पण करें नमोऽस्तु, हमको भी सिद्ध बना लो॥

ॐ ह्रीं णमो सिद्धाणं अनन्तानन्त सिद्धपरमेष्ठिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

चौबीसी का अर्घ्य

(लय–चौबीसी वत्...)

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पाएँ आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शान्ति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोऽस्तु करें॥

ॐ ह्रीं श्री वृषभादिवीरान्तेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

तीस चौबीसी का अर्घ्य (सखी)

नहिं केवल अर्घ चढ़ाने, नहिं श्रेष्ठ पदों को पाने।
बस तीस चौबीसी भजने, हम आए नमोऽस्तु करने॥

ॐ ह्रीं तीस चौबीसी सम्बन्धी सप्तशत विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्रीआदिनाथ स्वामी अर्घ्य (शुद्ध गीता)

मिलाकर आठ द्रव्यों को, बनाया अर्घ्य मनहारी।
बिठा दो आठवी भू पर, नशें दुख द्वन्द्व दुखकारी॥
प्रभो! आदीश की अर्चा, करें हम आज तन-मन से।
सुनो! अब प्रार्थना स्वामी, हरो संकट भगत जन के॥

ॐ ह्रीं श्रीवृषभनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य (दोहा)

सुपार्श्वप्रभु की विश्व में, लीला अपरम्पार।
पूजक बनके पूज्य फिर, चलें मोक्ष के द्वार॥

ॐ ह्रीं श्रीसुपार्श्वनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री चन्द्रप्रभ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

अष्ट अंगमय नमस्कार कर, अष्ट शुद्धिमय आए हम।
अष्ट कर्म को हरने स्वामी, अष्ट द्रव्य भी लाए हम॥
अष्टम वसुधा मिलती, अष्टम-चन्द्रप्रभु की पूजन से।
यश वैभव उत्तम पद मिलते, सविनय अर्घ समर्पण से॥

ॐ ह्रीं श्रीचन्द्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री शान्तिनाथ स्वामी अर्घ्य (शंभु)

है तीन लोक में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जड़ पुद्गल में।
है तीन काल में शान्ति कहाँ, है शान्ति कहाँ जग दलदल में॥

अपने सम विघ्न अशान्ति हरो, अर्घों सी शान्ति करो आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, शान्तिं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं श्रीशान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री मुनिसुव्रतनाथ स्वामी अर्घ्य (ज्ञानोदय)

नीर भाव वंदन चंदन है, अक्षत पुंज पुष्प भक्ति।
पद नैवेद्य दीप आशा का, धूप प्रीत की फल मुक्ति॥
ऐसा अर्घ्य-अनर्घपदक को, दिलवाने स्वीकार करो।
हे मुनिसुव्रत! संकटमोचन!, सब संकट परिहार करो॥

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ-जिनेन्द्राय अनर्घपद-प्राप्तये अर्घ्यं ...।

श्री नेमिनाथ स्वामी अर्घ्य

(लय : श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री नेमिप्रभु के पर्व, चढ़ा के अर्घ्य, सर्व कल्याणी।
हम करें नमोऽस्तु स्वामी॥
प्रभु देख प्राणियों का क्रंदन, झट तजे राज राजुल बन्धन।
फिर माँ-बाबुल का तज के दाना पानी, प्रभु बने भेद विज्ञानी।
श्री नेमिप्रभु के....॥

ॐ ह्रीं श्रीनेमिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री पार्श्वनाथ स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

द्रव्य मिला वसु अर्घ्य बनाए, भक्त मूल्य इसका जानें।
ऋद्धि-सिद्धि मंगलमय सक्षम, इच्छा पूरक भी मानें॥
अर्घ्य चढ़ा अनर्घपद पाने, पार्श्वनाथ को हम ध्याएँ।
भयहर! हे उपसर्ग विजेता!, भक्तों के मन वस जाएँ॥

ॐ ह्रीं श्रीपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

श्री महावीर स्वामी अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

हम तो एक जमीं के कण हैं, तीन लोक के तुम स्वामी।
अपना जीवन निंदित है पर, श्रेष्ठ पूज्य तुम जगनामी॥
ओस बूँद हम रत्नाकर तुम, रत्नों से झोली भर दो।
हम तो अर्घ्य चढ़ाएँ सादर, नजर दया की तुम कर दो॥

ॐ ह्रीं श्रीमहावीर जिनेन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं.....।

बाहुबली भगवान का अर्घ्य

(शंभु)

वैराग्य तुम्हारा देखा तो, भरतेश झुके भू अम्बर भी।
तब मुक्तिवधू नत नयना हो, वरमाला करे स्वयंवर भी॥
हो काश! हमारा भी ऐसा, सो अर्घ्य मनोहर अर्पित है।
प्रभु बाहुबली को नमोऽस्तु कर, चरणों में भक्ति समर्पित है॥

ॐ ह्रीं श्री बाहुबली जिनेन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

सोलहकारण का अर्घ्य

(आंचलीबद्ध चौपाई)

प्रासुक द्रव्य मिलाकर आठ, अर्घ्य बना करलें जिन पाठ।
करें कल्याण, पूजन कर पाएँ निर्वाण॥
भजें भावना सोलह रोज, तीर्थंकर पद की हो खोज।
बनें जिनराज, सो नमोऽस्तु कर पूजें आज॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादि षोडशकारणेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

पंचमेरू का अर्घ्य

पंचमेरू जिनशासन पर्व, भक्त चढ़ाके जिनको अर्घ्य।
करें त्यौहार, कर लें प्रभु सा निज उद्धार॥

पंचमेरू मंदिर जिन ईश, आठ हजार छह सौ चालीस।
भजें सुर लोग, कर नमोऽस्तु पूजें हम लोग॥

ॐ ह्रीं श्री पंचमेरूसंबंधि-जिनचैत्यालयस्थ-जिनबिम्बेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

नंदीश्वर का अर्घ्य

यह अर्घ्य दिखे कमजोर, पर बलवान बड़े।
जो खींचे प्रभु की ओर, सो हम आन खड़े॥
हम दुख संकट लें जीत, निज पर राज करें।
छप्पन सौ सोलह बिम्ब, नंदीश्वर सोहें॥

ॐ ह्रीं श्री नंदीश्वरद्वीपे द्विपंचाशज्जिनालयस्थ जिनप्रतिमभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं...।

दसलक्षण का अर्घ्य

(सखी)

यह अर्घ चढ़ा हो जादू, झट धर्म बना दे साधु।
ले पिछी कमण्डल डोलें, पट मोक्षमहल के खोलें॥
दसलक्षण के केशरिया, हम रंग में रंगने आए।
पूजा में करके नमोऽस्तु, दस धर्म मनाने आए॥

ॐ ह्रीं उत्तमक्षमादि दशलक्षणधर्मेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

रत्नत्रय का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

उपसर्गों से परीषहों से, डरकर रत्नत्रय न लिया।
हीरे जैसा मानव जीवन, कौड़ी जैसा गवां दिया॥
जड़ द्रव्यों के विकल्प तज के, चेतन धाम मिले हमको।
सो यह अर्घ्य करें हम अर्पित, हो नमोऽस्तु रत्नत्रय को॥

ॐ ह्रीं श्री सम्यक्रत्नत्रयाय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

जिनवाणी का अर्घ्य

(त्रिभंगी)

जिनवाणी मैया, संयम नैया, दे के भैया, मुक्त करें।
सो करें सवारी, हों अनगारी, मुक्ति नारी, प्राप्त करें॥
तीर्थंकर वाणी, सुनकर ज्ञानी, गणधर स्वामी, श्रुत रचते।
माँ सरस्वती हम, पाने आतम, अर्घ्य से अर्चन, अब करते॥

ॐ ह्रीं श्री जिनमुखोद्भव सरस्वतीदैव्यै अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

सप्तर्षि का अर्घ्य (दोहा)

श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय, सर्वसुन्दर जयवान।
विनयलालस जयमित्रजी, भजें सप्तऋषि नाम॥

ॐ ह्रीं श्री मनु स्वरमनु श्रीनिचय सर्वसुन्दर जयवान विनयलालस जयमित्राख्य-चारणऋषिभ्यो नमः अर्घ्यं...।

निर्वाणक्षेत्र का अर्घ्य (शुद्ध गीता)

उसी मय आत्मा होती, जिसे जो चाहते मन से।
किया जब ध्यान सिद्धों का, मिले सो सिद्ध भगवन से॥
करें शुद्धात्म सिद्धों सम, अतः यह अर्घ अर्पित है।
भजें निर्वाण क्षेत्रों को, नमोऽस्तु भी समर्पित है॥

ॐ ह्रीं अर्हं श्री निर्वाणक्षेत्रात् मुक्तिप्राप्त मुनिभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

श्री सम्मेदशिखर का अर्घ्य (शंभु)

सम्मेदशिखर का तीरथ तो, सब तीर्थों का ही सार रहा।
सो इसकी तीर्थ वन्दना बिन, हम समझें सब निस्सार रहा॥
अब अर्घ चढ़ा हर टोंकों को, कर परिक्रमा निज खोज रहे।
सो कहें णमो सिद्धाणं हम, सम्मेदशिखर को पूज रहे॥

ॐ ह्रीं श्री सम्मेदशिखर सिद्धक्षेत्रेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतुलनीय विद्यागुरुवरजी, तुल न सके उपकरणों से।
सब उपमाएँ फीकी पड़तीं, सज न सके आभरणों से॥
यूँ तो गुरु के सिर पर कोई, ताज नहीं आवाज नहीं।
पर ऐसा है कौन यहाँ दिल, जिस पर गुरु का राज नहीं॥

ॐ ह्रूं आचार्य गुरुवर श्रीविद्यासागर मुनीन्द्राय अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

मुनि श्री सुव्रतसागरजी महाराज का अर्घ्य

(ज्ञानोदय)

अष्ट द्रव्य ले सोच रहे हम, और समर्पित क्या कर दें।
तन मन जीवन गुरु चरणों में, जल्दी अर्पित हम कर दें॥
गुरु चरणों के योग्य बनें हम, यह वरदान हमें दे दो।
कर नमोऽस्तु यह अर्घ्य चढ़ाएँ, अपनी शरण हमें ले लो॥

ॐ ह्रः श्री सुव्रतसागर मुनीन्द्राय अनर्घपदप्राप्तये अर्घ्यं...।

महार्घ्य

(हरिगीतिका)

अर्हंत सिद्धाचार्य आदि, देव परमेष्ठी भजें।
रत्नत्रयी दसधर्म पूजें, भावना सोलह भजें॥
कृत्रिम अकृत्रिम बिम्ब आलय, हम भजें त्रयलोक के।
अनुयोग चारों तीर्थ पाँचों, पूजते हम ढोक दे॥
प्रभु नाम कल्याणक भजें, नंदीश्वरा मेरु भजें।
श्री सिद्ध-अतिशयक्षेत्र पूजें, तीस चौबीसी भजें॥
मन से वचन से काय से हम, जैनशासन पूजते।
जिन पूजकर निज प्राप्ति हेतु, चेतना सुख खोजते॥

(दोहा)

सर्व पूज्य को हम भजें, आत्मसिद्धि के काज।
महा अर्घ्य ले पूजते, करके नमोऽस्तु आज॥

ॐ ह्रीं भावपूजा-भाववन्दना-त्रिकालपूजा-त्रिकालवन्दना-कृत-कारित-अनुमोदना-विषये श्री अर्हंत-सिद्ध-आचार्य-उपाध्याय-सर्वसाधु-रूप-पंचपरमेष्ठिभ्यो नमः। प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोग-रूप-द्वादशांग-जिनागमेभ्यो नमः। उत्तमक्षमादि-दशलक्षण-धर्मेभ्यो नमः। दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः। सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्रेभ्यो नमः। उर्ध्वलोक-मध्यलोक-अधोलोक-संबंधिनः-त्रिलोक-स्थित-कृत्रिम-अकृत्रिम-जिनबिम्बेभ्यो नमः। विदेहक्षेत्र-स्थित-विद्यमान-विंशति-तीर्थंकरेभ्यो नमः। पंचभरत-पंचऐरावत-दशक्षेत्र-संबंधिनः त्रिंशत्-चतुर्विंशति-संबंधिनः-सप्तशतक-विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमः। नंदीश्वरद्वीप-संबंधिनः-द्विपञ्चाशत्-जिनालयस्थ-पंचसहस्त्र-षट्शतक-षोडश-जिनबिम्बेभ्यो नमः। पञ्चमेरु-सम्बधी-अशीति जिनालयस्थ-अष्टसहस्त्र-षट्शतक-चत्वारिंशत्-जिनबिम्बेभ्यो नमः। श्रीसम्मेदशिखर-अष्टापद-गिरनार-चम्पापुर-पावापुर-कुंडलपुर- पवाजी-सोनागिरादि-सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः। जैनबद्री-मूढ़बद्री-हस्तिनापुर-तिजारा-पद्मपुरा-महावीरजी-खंदारजी-चंदेरी-हाटकापुरा-आदि-अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः। श्री चारणऋद्धिधारी सप्तऋषिभ्यो नमः। श्रीवृषभादि-वीरान्त-चतुर्विंशति-तीर्थंकरादि-नवदेवता-जिनसमूहेभ्यो नमः जलादि-महाऽर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

शान्तिपाठ

(हरीगीतिका)

हम इन्द्र चक्री तो नहीं बस, मूढ़ जैसे भक्त हैं।
धन ज्ञान वा सम्यक् क्रिया की, शास्त्र विधि से रिक्त हैं॥
बस आपके श्रद्धालु हैं हम, भक्ति को मजबूर हों।
सो गल्तियाँ होना सहज हैं, जो क्षमा से दूर हों॥
तुम तो क्षमा अवतार हो, प्रभु दान दो उत्तम क्षमा।

तो हम क्षमाधारी बनें कुछ, पुण्य पूजा से कमा॥
जब तक क्षमा का धाम निज में, ना मिले विश्राम तो।
तब तक मिले अर्हंत शरणा, सिद्ध प्रभु का ध्यान हो॥

(दोहा)

परमेष्ठी नवदेवता, चौबीसों भगवान।
पाप हरें सुख शान्ति दें, करें विश्व कल्याण॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (जल की धारा करें)

अपने उर में बह उठे, विश्व शान्ति की धार।
कर्मों के ग्रह शान्ति को, नमोऽस्तु बारम्बार॥

(शान्तये शान्तिधारा...) (चंदन की धारा करें)

(हरीगीतिका)

अभ्यास शास्त्रों का करें, निर्ग्रन्थ गुरु की अर्चना।
हो विश्व शान्ति आत्म शान्ति, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥
हों रोग ना व्याधि किसी को, खेद ना दुख कष्ट हों।
मौसम सदा अनुकूल होवे, जीव ना पथ भ्रष्ट हों॥

(दोहा)

परमेष्ठी का मंत्र जो, महामंत्र णमोकार।
हम सब मिलकर अब यहाँ, मत्र जपें नौ बार॥

(पुष्पांजलिं... कायोत्सर्गं...)

विजर्सन पाठ

(दोहा)

ज्ञान और अज्ञान से, रही भूल जो नाथ।
आगम-विधि वो पूर्ण हो, पाकर तेरा हाथ॥
मंत्रादिक से हीन मैं, नहिं पूजन का ज्ञान।
मुझे क्षमा कर दीजिये, चरण शरण का दान॥

शीश झुकाऊँ आज मैं, हो पूजा सम्पन्न।
पाप हरो मंगल करो, करो मुझे प्रभु धन्य॥

ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः अ सि आ उ सा अर्हदादि-परमेष्ठिनः पूजाविधिं विसर्जनं करोमि। अपराध-क्षमापणं भवतु। यः यः यः।

(उक्त मंत्र पढ़कर ठोने पर पुष्प क्षेपण कर विसर्जन करें।)

श्री जिनवर की आशिका, लीजे शीश चढ़ाय।
भव-भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप)

===

श्री शांतिनाथ पूजन विधान

स्थापना

(दोहा)

क्षेत्र भोजपुर तीर्थ के शान्तिनाथ भगवान ।
जगत प्रसिद्ध जिनेन्द्र को, हो नमोस्तु धर ध्यान॥

(हरीगीतिका)

श्री शान्तिनाथ विराजते हैं, भोजपुर शुभ क्षेत्र में।
सो भक्त प्रतिदिन पूजते हैं, भक्ति से जिनतीर्थ में॥
स्वामी पधारो अब हृदय में, भक्त की सुन प्रार्थना।
उद्धार अपना कर सकें प्रारम्भ कर प्रभु अर्चना॥

(दोहा)

प्रथम-प्रथम आराध्य हैं, शान्तिनाथ भगवान।
चरण-शरण में लीजिए, करिए प्रभु कल्याण॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र अत्र अवतर अवतर संवौषट्...। अत्र तिष्ठ-तिष्ठ ठः ठः ...। अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्...।।

जब कामनाएँ शेष हों तो, जन्म फिर-फिर से हुए।
जब कामनाएँ हुई विजित वो, जन्म कल्याणक हुए॥
प्रभु शान्तिनाथ जिनेन्द्र जैसा, निज महोत्सव हम करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु की, शान्तिधारा हम करें॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय जन्म जरा मृत्यु विनाशनाय जलं...।

जब तक कषायों से जलो, तब तक न कुछ भी शान्ति हों।
ज्यों ही कषायों को जलाएँ, शान्ति जैसी शान्ति हों॥

प्रभु शान्तिनाथ जिनेन्द्र जैसी, छाँव हम हासिल करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु के, चरण में चन्दन धरें॥
ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय संसार ताप विनाशनाय चन्दनं...।

कुछ शेष आकुलता रहे तो, भोगती दुख आतमा।
भव-भव भटक के धर्म खो के, खोजती सुख आतमा॥
श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्र सा, अध्यात्म पद हासिल करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु की, पुंज ले भक्ति करें॥
ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्दाय अक्षय पद प्राप्तये अक्षतान्...।

यह फूल सा जीवन हमारा, शूल सा क्यों हो रहा।
मुरझा रहा क्यों काम में, ये तो उलझ के रो रहा॥
प्रभु शांतिनाथ जिनेन्द्र जैसे, ब्रह्म की विद्या वरें॥
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु की, पुष्प ले पूजा करें॥
ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय कामबाण विध्वंसनाय पुष्पाणि...।

दिन रात हम पैसा कमा के, पेट या पेटी भरें।
संतोष धारण के बिना ये, पेट पेटी न भरें॥
प्रभु शान्तिनाथ जिनेन्द्र जैसे, स्वाद चखने गुण धरें।
सो भोजपुर के शांतिप्रभु, नैवेद्य लेकर हम भजें॥
ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं...।

संसार में भटके जनो को, मार्ग जब सूझे नहीं।
जीवन लता मुरझा गयी हो, बात जब सुलझे नहीं॥

ऐसे प्रसंगों में विजय पा, शांति सुख अर्जित करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु को, दीप ले पूजा करे॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोहांधकाराय विनाशनाय दीपं...।

हैं खेल कर्मों के जगत में, जीव सारे खेलते।
कोई विजय यश तो यहाँ, कोई पराजय झेलते॥
पाकर विजय हर कर्म पर हम, नष्ट कर्मों को करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु को, धूप ले पूजा करें॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अष्टकर्म दहनाय धूपं...।

नाना तरह के जीव हैं, नाना तरह संसार है।
कोई सुखी कोई दुखी सब, कर्म फल व्यापार है॥
हम त्याग कर संसार फल को, प्राप्त मोक्षालय करें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु को, फल ले पूजा करें॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय मोक्षफल प्राप्ताय फलं...।

रतिनाथ लेकर जन्म चक्री, फिर बनें तीर्थंकरा।
सुख शान्ति वा समृद्धि दे, कल्याण भक्तों का करा॥
हम आपके श्रद्धालु हैं, भण्डार अपना भी भरें।
सो भोजपुर के शान्तिप्रभु की, अर्घ्य ले पूजा करें॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय अर्घ्यं...।

श्री पंचकल्याणक अर्घ्य

(लय : गिल्ली डंडा खेल.....)

नमो-नमो जप रहो थो, माँ ऐरा तेरो लाडलो[२]
एक बार देखो हमने ऐरा माँ के पुण्य में[२]
चुपके-चुपके सो रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने, हस्तिनापुर तीर्थ में[२]
रत्न-वर्षा पाए रहो थो, माँ ऐरा .... नमो....
एक बार देखो हमने सारे संसार में[२]
गर्भ कल्याणक छाए रहो थो, माँ ऐरा...नमो....

(दोहा)

कृष्ण सप्तमी भाद्र को, तजकर स्वर्ग विमान।
ऐरा माँ के गर्भ में, वसे शान्ति भगवान्॥

ॐ ह्रीं भाद्रकृष्णसप्तम्यां गर्भमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : बाजे कुण्डलपुर....)

बाजे हस्तिनापुर में बधाई, कि नगरी में शान्ति जन्मे...शान्तिनाथजी
शुभ मंगल बेला आई, त्रिलोक में आनन्द छाया... शान्तिनाथजी
सौधर्म शचि सह आये, कि अभिषेक मेरु पे करें... शान्तिनाथजी
नृप विश्वसेन हर्षाये, कि जन्म कल्याणक है... शान्तिनाथजी
चौदह कृष्णा ज्येष्ठ को, जन्मे शान्ति विराट।
विश्वसेन के आँगने, ज्ञान-बताशा बाँट॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां जन्ममङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लय : अय मेरे प्यारे वतन...)

अय! हमारी आतमा, अय! परम परमात्मा- झूठी दुनियाँ त्याग, धार ले वैराग्य

जन्म मृत्यु कर्म सुख दुख, कर अकेले ही सहन।
पुत्र पत्नि मित्र बन्धु, स्वार्थ में सब हैं मगन॥
मोह मिथ्या नींद से अब, जाग चेतन जाग। धार ले वैराग्य।
जन्म-तिथी में तप धरे, तजे अशान्ति शोर।
शान्तिनाथ मुनि को हुई, नमोस्तु चारों ओर॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां तपोमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

(लोलतरंग)

जब तक है अज्ञान अँधेरा, तब तक ज्ञान की ज्येति मिले ना।
जब तक ज्ञान की ज्योति मिले ना, तब तक मोह का अंध टले ना॥
जैसे ही मोह का अंध नशाये, केवलज्ञानी हों अर्हन्ता।
तत्त्व प्रकाशी निज रस स्वादी, जय-जय शान्तिनाथ जिनन्दा॥
दशमी शुक्ला पौष में, पाया केवलराज।
नमन शान्ति अर्हन्त कोएकरती भक्त समाज॥

ॐ ह्रीं पौषशुक्लदशम्यां ज्ञानमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.....।

जब तक है अर्हंत अवस्था, तब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे।
जब तक कर्म न पूर्ण नशेंगे, तब तक शुद्ध न सिद्ध बनेंगे॥
कर्म नशें ज्यों मोक्ष मिले त्यों, सिद्ध बने गुण पाए अनन्ता।
काल अनन्ता, ब्रह्म रमन्ता, जय-जय, जय-जय सिद्ध महन्ता॥
चौदस कृष्णा ज्येष्ठ को, मोक्ष गए शान्तीश।
कुन्दप्रभ कूट शाश्वतगिरि, को वंदन नत शीश॥

ॐ ह्रीं ज्येष्ठकृष्णचतुर्दश्यां मोक्षमङ्गलमण्डिताय श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं...।

[यदि मात्र पूजन करना हो तो पेज नं. ३९ पर जयमाला करके पूर्ण करना चाहिए।]

मंगलाचरण

ओम् नमः सिद्धेभ्य...। -४

(जोगीरासा)

जिनशासन की परम्परा में, चौबीसी की धारा।
धर्मध्वजा को फहराती हैं, देती धर्म सहारा॥
वृषभनाथ से महावीर तक, चौबीसों हम पूजें।
फिर भी शान्तिनाथ स्वामी के, जय-जयकारे गूँजें॥ ओम् ...
हर प्राणी सुखशान्ति तलाशें, दुख से हैं घबराए।
सारी दुनियाँ घूम चुके पर, कहीं शान्ति ना पाए॥
शान्तिनाथ के सुनके अतिशय, हम भी बने पुजारी।
हे! करुणाकर करुणा करदो, दे दो मोक्ष सवारी॥ओम् ...
दुनियाँ के उपसर्ग शान्त, हों भय संकट ना आएँ।
रोग-शोक दुख वियोग न हों, ऋद्धि-सिद्धि सब पाएँ॥
विश्वशान्ति की करें भावना, अपने कर्म नशाएँ।
'विद्या' के 'सुव्रत' को स्वामी, मंगल शान्ति दिलाएँ॥ओम् ...
तेरी शान्ति मेरी शान्ति, सबकी शान्ति होवे।
शान्ति शान्ति होए जगत में, घर-घर शान्ति होवे॥
शान्ति शान्ति होए हृदय में, धार्मिक शान्ति होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोस्तु, आतम शान्ति होवे॥ओम् ...
तेरा मंगल मेरा मंगल, सबका मंगल होवे।
सुखिया होवे सारी दुनियाँ, कोई दुखी ना होवे॥
कण-कण मंगल क्षण-क्षण मंगल, जन-जन मंगल होवे।
शान्तिनाथ को करके नमोऽस्तु, जग का मंगल होवे॥ ओम् ...

(पुष्पांजलिं...)

श्री शान्तिनाथ ऋद्धि विधान एवं दीप अर्चना

(लय–माता तू दया करके...)

जय कर्म इन्द्रियाँ कर, जो पूज्य हुए जिनवर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो जिणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१॥

जब अवधिज्ञान पाए, तो धर्म दिए हितकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो ओहिजिणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२॥

परमावधि ज्ञान किए, परमातम में वस कर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो परमोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३॥

सर्वावधि ऋद्धि पा, सुख शान्ति दिए भर-भर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४॥

गुण अनन्त-अवधि पाकर, आतम के गुण गाकर।
श्री शान्तिनाथ प्रभु को, हम खुश हैं नमोऽस्तु कर॥

ॐ ह्रीं णमोअणंतोहिजिणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥५॥

(लघु चौपाई)

कोष्टबुद्धि का पाकर सार, सबको दिए शान्ति भण्डार।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो कोट्ठबुद्धीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥६॥

बीज बुद्धि का पा आलोक, स्वामी हरें जगत के शोक।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो बीजबुद्धीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥७॥

पदानुसारी पाकर धाम, शान्ति बनाएँ सबके काम।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो पदाणुसारीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥८॥

संभिन्नश्रोतृ पाकर ज्ञान, स्वामी करें जगत कल्याण।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमोसंभिण्णसोदाराणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥९॥

स्वयंबुद्ध से धर वैराग्य, शान्ति जगाएँ सबके भाग्य।
हम नमोऽस्तु करते धर ध्यान, जय-जय शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सयंबुद्धाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१०॥

(जोगीरासा)

रंग-बिरंगे जगत नजारे, हमको खूब लुभाएँ।
शान्तिनाथ जी जगत त्याग कर, शुद्धातम चमकाएँ॥
तीर्थंकर प्रत्येकबुद्ध जी, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो पत्तेयबुद्धाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥११॥

पर से पाकर गुण शिक्षाएँ, जीते सभी परीक्षा।
शुद्ध-बुद्ध एकत्व चेतना, ध्याने देते दीक्षा॥

बोधितबुद्ध देव तीर्थंकर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो बोहियबुद्धाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१२॥

अपने परके सरल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान मनःपर्यय-ऋजुमति धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो उजुमदीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१३॥

अपने पर के कुटिल विषय जो, मन के जान रहा हो।
फिर भी उनमें कभी न रमता, सम्यग्ज्ञान रहा वो॥
ज्ञान विपुलमति मनःपर्यय धर, शान्तिनाथ कहलाएँ।
हम तो करें नमोऽस्तु स्वामी, हमको शान्ति दिलाएँ॥

ॐ ह्रीं णमो विउलमदीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१४॥

(हाकलिका)

दस पूर्वों के जो ज्ञाता, भक्तों को दें सुख साता।
दस पूर्वी अखियाँ खोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो दसपुव्वियाणं (दसपुव्वीणं) श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१५॥

चौदहपूर्वी ऋद्धि धरें, भक्तों की समृद्धि करें।
चौदह पूर्वी सुख तो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चउदसपुव्वियाणं (चउदसपुव्वीणं) श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१६॥

जो अष्टांग निमित्त धरें, खुद को पर को मुक्त करें।
कुशल मंत्र चेतन धो लो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो अट्ठंगमहाणिमित्तकुसलाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ १७॥

अणिमा आदिक ऋद्धि धरें, निज-पर का उद्धार करें।
ऋद्धि विक्रिया ले डोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमोविउव्वणपत्ताणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१८॥

विद्याधर नर व्रतधारी, मुक्तिरमा के अधिकारी।
विद्याधर सम सुख घोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो विज्जाहराणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥१९॥

चारणऋद्धि धरें स्वामी, रोग-शोक हरते स्वामी।
चारणऋद्धि मंत्र बोलो, शान्तिनाथ की जय बोलो॥

ॐ ह्रीं णमो चारणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २०॥

(सखी)

जो बिना पढ़े हों ज्ञानी, वो प्रज्ञा श्रमण निशानी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो पण्णसमणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२१॥

आकाश गमन जो करते, भक्तों की रक्षा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आगासगामीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२२॥

जो कभी न मारें प्राणी, आशीर्विष धर कल्याणी।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो आसिविसाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२३॥

जो कुपित दृष्टि ना धरते, हम सब पर करुणा करते।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो दिट्ठिविसाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२४॥

तप कठिन करें ले दीक्षा, कर्मों की करें परीक्षा।
श्री शान्तिनाथ जिनन्दा, हमको दें परमानन्दा॥

ॐ ह्रीं णमो उग्गतवाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २५॥

(शुद्ध गीता)

तपस्या खूब करके भी, चमकती देह है जिनकी।
उन्हीं की अर्चना करके, सँवरती जिन्दगी सबकी॥
धरें वह दीप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो दित्ततवाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२६॥

करें आहार तो लेकिन, निहारों पर विजय पा ली।
मिला यह साधना का फल, दिए भक्तों को खुशहाली॥
धरें वह तप्ततप हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो तत्ततवाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२७॥

महातप खूब करके जो, ध्वजा जिनधर्म की धारें।
करें उपवास कल्याणी, उतारें पार भव तारें॥
महातप पूज लें हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो महातवाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥२८॥

तपस्या घोर करके जो, करें हर हल समस्या को।
इन्हीं की अर्चना करके, सफल अपनी तपस्या हो॥
भजें हम घोर तप स्वामी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरतवाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ २९॥

धरें ऋषि घोर गुण न्यारे, तपस्या के सहारे से।
हरें संसार की पीड़ा, बने सबके दुलारे से॥
धरें वह घोर गुण हम भी, सदा जिससे जयोऽस्तु हो।
श्री शान्तिप्रभु को तो, सदा सादर नमोऽस्तु हो॥

ॐ ह्रीं णमो घोरगुणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३०॥

(चौपाई)

विश्व विनाशक बल धारें पर, घोरपराक्रम करें हितंकर।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो घोरपरक्कमाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥३१॥

महा अघोर ब्रह्म गुण ज्ञानी, जगत हितैषी केवलज्ञानी।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमोऽघोरगुणबंभयारीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥ ३२॥

ऋषियों का तन छूकर आई, आमर्षौषधि ऋद्धि सुहाई।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो आमोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥३३॥

लार-थूक-कफ खेल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो खेल्लोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥३४॥

देह पसीना जल्ल कहाएँ, तप से औषधि रूप सुहाएँ।
शान्तिनाथ की जय-जय गूँजें, करके नमोऽस्तु हम भी पूजें॥

ॐ ह्रीं णमो जल्लोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥३५॥

(दोहा)

मल-मूत्रों को छू पवन, करे स्वस्थ तन प्राण।
विप्रुष-औषधि के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो विट्ठोसहिपत्ताणं (विप्पोसहिपत्ताणं) श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥३६॥

वायु तन छूकर करे, स्वस्थ सुखी इन्सान।
सर्वौषधि गुण के धनी, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो सव्वोसहिपत्ताणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्ज्वलनं करोमि॥३७॥

बिना थके चिन्तन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
मनोबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो मणबलीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३८॥

बिना थके वाचन करें, मुहूर्त में श्रुतज्ञान।
वचनबली के नाथ हैं, शान्तिनाथ भगवान॥

ॐ ह्रीं णमो वचिबलीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ३९॥

(विष्णु)

वज्र समान कायबल पाकर, कभी न पाप करें।
मुक्तिवधू से व्याह रचाने, कायोत्सर्ग करें॥
भेद-ज्ञान के योग्य कायबल, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो कायबलीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४०॥

क्षीर समान भोज्य हो जाता, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप तपस्या होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि क्षीरस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो खीरसवीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४१॥

नीरस भोजन घी जैसा हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप साधना होती, प्रभु की गरिमा से॥
सर्पिस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो सप्पिसवीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४२॥

कटुक भोज्य भी मधुर मिष्ट हो, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप अर्चना होती, प्रभु की गरिमा से॥
ऋद्धि मधुस्रावी ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो महुरसवीणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४३॥

जहर बने अमृत के जैसा, तप की महिमा से।
सम्यक् रूप भावना होती, प्रभु की गरिमा से॥
अमृतस्रावी गुण ऋषियों को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अमडसवीणं (अमियसवीणं) श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४४॥

ऋषि आहार शेष ऐसा हो, तप की गरिमा से।
कटक पेट भर रहे साथ में, प्रभु की महिमा से॥
यह अक्षीणमहानस-आलय, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो अक्खीणमहाणसाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४५॥

तीनलोक के सिद्ध आयतन, सिद्धशिला तक जो।
चरण धूल सिद्धों की पाने, सादर वन्दन हो॥
ओम नमः सिध्देभ्यः भजकर, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोएसव्वसिद्धायदणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... / दीपं प्रज्वलनं करोमि॥४६॥

अवगुण त्यागें सद्गुण धारें, वर्धमान जैसे।
जिनके हम श्रदालु जिन बिन, रहें कहो कैसे॥
वर्धमान जैसी चर्या को, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो वड्ढमाणाणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं.../दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४७॥

जिनशासन में संचालित हो, आज वीरशासन।
सर्व साधुओं की धारा यह, करे धर्म रक्षण॥
गौतम-गुरु से विद्या-गुरु तक, हम पूजें आहा।
ओम् ह्रीं शान्तिनाथ जिनेन्द्राय, नमो नमः स्वाहा॥

ॐ ह्रीं णमो लोए सव्वसाहूणं णमो भयवदो महदि महावीरवड्ढमाण बुद्धरिसिणं श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय अर्घ्यं... /दीपं प्रज्वलनं करोमि॥ ४८॥

पूर्णार्घ्य

(हरिगीतिका)

तीर्थंकरों के रूप शान्ति, गणधरों के नाथ हैं।
दुख-दर्द हर्त्ता मंत्र साँचे, भक्त जन के साथ हैं॥
सुख ज्ञान की वर्षा करो, अध्यात्म अंकुर हो सकें।
'सुव्रत' सम्भालें धर्म अपने, कर्म दल-मल धो सकें॥

(दोहा)

शान्तिनाथ जिनवर करें, हम सबका कल्याण।
हम चरणों में आ पड़े, स्वीकारो भगवान॥

ॐ ह्रीं सर्वऋद्धि सम्पन्न श्री शान्तिनाथ-जिनेन्द्राय पूर्णार्घं...।

सम्पूर्णार्घ्य

(ज्ञानोदय)

अतिशय क्षेत्र भोजपुर वाले, शान्ति सुपारस पार्श्व प्रभो।
भक्तों के दुख दर्द मिटाकर, देते सुख अध्यात्म विभो॥
साथ-साथ वा अलग-अलग में, अर्घ्य चरण में धरते हैं।
'सुव्रत' को सुख शान्ति मिले सो, नमोऽस्तु सादर करते हैं॥

(सोरठा)

नमोऽस्तु कर स्वीकार, प्रभु भक्तों पर ध्यान दो।
करने को उद्धार, वीतराग विज्ञान दो॥

ॐ ह्रीं श्री अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्र एवं समस्त जिनेन्द्रेभ्यो नमः सम्पूर्णार्घं...।

(जाप्यमंत्र)

ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं अर्हं श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय नमो नमः।

अथवा

ॐ ह्रीं जगच्छांतिकराय श्री शान्तिनाथाय नमः सर्वोपद्रव शान्तिं कुरु-कुरु स्वाहा।

जयमाला

(दोहा)

शान्तिनाथ भगवान जी, वसे भोजपुर धाम।
भक्तों के दुख गम हरें, सो हम करें प्रणाम।
पूजा जयमाला करें, अर्पित तन मन प्राण।
शान्तिनाथ भगवान जी, करें जगत कल्याणं॥

(ज्ञानोदय)

भारत देश मध्यप्रदेश की, है भोपाल राजधानी।
जहाँ निकट में तीर्थ भोजपुर, अतिशयकारी कल्याणी॥

जो भोपाल आज का है वो, भोजपाल था नगर खड़ा।
वहाँ एक धर्मी राजा था, राजा भोज महान बड़ा॥
सर्व धर्म समभाव भाव से, धर्म और अध्यात्म करे।
सो उसने प्रभु शांतिनाथ का, बनवाया जिनतीर्थ अरे॥
आजू-बाजू पार्श्व सुपारस, भक्तों के मन मोह रहे।
लगभग एक हजार वर्ष के, पहले से प्रभु शोभ रहे ॥ २॥
शान्तिनाथ बाईस फुट ऊँचे, आठ-आठ फुट बगलों में।
तीर्थ भोजपुर का मंदिर यह, ले जाता शिव महलों में॥
इसीलिए इस पूज्य क्षेत्र पर, भक्तों का रहता आना।
जिनदर्शन से जिनपूजन से, सुख शांति पाते नाना ॥३॥
इस पावन पुनीत धरती पर, बहुत विशुद्धी बढ़ती है।
मानतुंग आचार्य गुरु की, दृष्टि यहीं पर पड़ती है॥
भक्तामर स्तोत्र काव्य की, रचना के जो स्वामी हैं।
हुई समाधि यहाँ उन्हीं की, सिद्ध जीव आगामी हैं॥४॥
शिला यहाँ की सिद्धशिला सम, आकर्षित करती सबको।
यहाँ शान्ति है! यहाँ शान्ति है!, शान्ति बाँटती भक्तों को॥
जो अध्यात्म शांति के प्रेमी, वो अध्यात्म खोजते हैं।
ऋद्ध-सिद्धि सुख समृद्धि पा, शान्ति-शान्ति पूजते हैं॥५॥
शान्तिनाथ का जिनमंदिर तो, जीवन की शिक्षा देता।
समाधि स्थली समाधि साधना, करने की दीक्षा देता॥
ऊँचा कीर्ति स्तम्भ यहाँ का, मानतुंग सम तुंग रहा।
अतः भोजपुर का यश वैभव, सारे जग में गूँज रहा ॥६॥
ऊर्जावान क्षेत्र यह साँचा, ऊर्जा सदा बढ़ाता है।

अगर प्रार्थना मन से हो तो, मनवांछित फल दाता है ॥
रोगों की है यहाँ औषधि, भटकों की है राह यहाँ।
जिसने जो चाही है उसकी, पूर्ण हुई है चाह यहाँ ॥७॥
अश्वसेन हे! ऐरानंदन, हस्तिनागपुर जन्म लिए।
मोक्ष गए सम्मेद शिखर से, तीन-तीन पद धन्य किए ॥
कामदेव ने काम नशाया, चक्री ने भव चक्र हरा।
तीर्थंकर ने धर्म धार कर, पाया आतम मोक्ष खरा ॥८॥
हम भी चरणों में आए हैं, हमको जरा निहारो रे।
रोग शोक दुख हरो अशान्ति, भव से पार उतारो रे॥
शान्ति-शान्ति अध्यात्म शान्ति की, कृपा करो प्रभु छाँव करो ।
'सुव्रत' पाएँ आतम विद्या, भूल-चूक सब माफकरो ॥९॥

(दोहा)

शान्तिनाथ भगवान जी, वसे भोजपुर धाम।
करके नमोस्तु अर्चना, पाएँ शान्ति मुकाम॥

ॐ ह्रीं अतिशय क्षेत्र भोजपुर स्थित श्री शान्तिनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्ताय जयमाला पूर्णार्घ्यं...।

(दोहा)

शान्तिनाथ स्वामी करें, विश्वशान्ति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शान्तये शान्तिधारा)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाए।
भव दु:खों को मेंट दो, शान्तिनाथ जिनराय॥

(पुष्पांजलिं...)

===

महिमा—श्री शान्तिनाथ दीप अर्चना

(लय—श्री सिद्धचक्र का पाठ...)

श्री शान्तिनाथ का पाठ, करो दिन रात, ठाठ से प्राणी।
हो हम सबको कल्याणी॥
श्री शान्तिनाथ तीनों पदधर, प्रभु कामदेव चक्री जिनवर।
हो शान्ति प्रदाता शान्ति विधाता स्वामी, चरणों में है प्रणमामि॥
हो हम सबको कल्याणी॥
प्रभु जाप रोग दुख हर्त्ता है, संसार मोक्ष सुख कर्त्ता है।
सो इन्द्र नरेन्द्र सुरेन्द्र करें प्रणमामि, आशीष मिले वरदानी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥
आशीष प्रभु का पाने को, नर जीवन सफल बनाने को।
हम करें भक्ति प्रभु पूजा कर्म विरामी, सो सिद्ध बनें आगामी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥
बस पूरी कर दो ये इच्छा, सुख शान्ति मिले मंगल शिक्षा।
सो 'सुव्रत' गाएँ प्रभु की कथा कहानी, बन जाएँ ज्ञानी-ध्यानी॥
हो हम सबको कल्याणी ॥

===

आगे बनूँगा
प्रभु पदों में अभी
बैठ तो जाऊँ

श्री शान्तिनाथजी—आरती

(छूम छूम छना ननना...)

छूम छूम छना ननना बाजे, बाबा करूँ आरतिया।
करूँ आरतिया बाबा करूँ आरतिया॥ छूम छूम....
विश्वसेन के राज दुलारे, ऐरा माँ के नयन सितारे।–२
हस्तिनापुर अवतारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
चौबीसी में सबसे न्यारे, शान्तिनाथ भगवान हमारे।–२
हैं प्राणों से प्यारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
कामदेव चक्री तीर्थंकर, वीतराग सर्वज्ञ हितंकर।–२
विश्वशान्ति के सहारे, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
धर्मधार को आप बहाते, कर्मों के ग्रह रोग नशाते।–२
शान्तिधारा वाले, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...
आत्मशान्ति के हम अभिलाषी, विद्या गुरु के हम विश्वासी।२
'सुव्रत' के प्रत्याशी, बाबा करूँ आरतिया॥ करूँ...

===

गुरु ने मुझे
प्रकट कर दिया
दीया दे दिया

भजन

शान्तिप्रभु मेरे जीवन की नाँव।
हे प्रभु! नैया पार लगा दो[२], दो चरणों की छाँव।
टूटी फूटी मेरी नैया, तुम बिन कौन खिवैया।
भोग व्यसन के तूफानों में, कोई नहीं बचैया॥
अब तो मुझको दे दो सहारा[२] दुखने लागे पाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥१॥

मिथ्या की आँधी से यह नैया, उल्टी दिशा में जाए।
विषय-कषायों की भँवरों में, डोले व टकराए॥
प्रभु! नाजुक पतवार सँभालो[२], दे दो किनारा गाँव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥२॥

बुरे-विचारों की लहरों ने, नैया की कमजोर।
राग-द्वेष वाले ज्वार-भाटों का, चंदा करता शोर॥
आसक्ति के खारे जल में[२], मेरा बचा लो बहाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥३॥

भूत पिशाचों के मच्छों ने, नैया की बेहाल।
लेकिन नाम तुम्हारा जप के, होती मालामाल॥
अन्तर बाहर भर दो शान्ति[२], दो निज रूप स्वभाव।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥४॥

सारी दुनियाँ शान्ति खोजे, राजा रंक फकीर।
जिसको भी तुम मिलते उसकी, सजती है तकदीर॥
'सुव्रत' के मन मन्दिर में आओ[२], ढलने लगी अब साँझ।
शान्तिप्रभु मेरे जीवन...॥५॥

===